आओ करें जन्माष्टमी के साथ न्याय

एक नन्हीं सी बच्ची ने मम्मी से कहा...मम्मी आज डैडी का बर्थ डे है। डैडी कहाँ हैं? मैं उनसे ढ़ेर सारी चॉकलेट लूंगी। आप उनके लिए बढ़िया सा केक बनाना, हम उन्हें विश करेंगें। मम्मी ने कहा...आज मेरे ठाकुर जी का भी बर्थ डे है, उन्हें भी विश करेंगे। बच्ची कहती है ' कौन से ठाकुर? मम्मी कहती, वो जो सामने फोटो लगा है जो...। वो तो मेरा कान्हा है। वे कहाँ है? हम उनके साथ केक काटेगें। मम्मी निरुत्तर थी। खैर, आज हर आयु, वर्ग वाले लोग उन महान, दिव्य श्री कृष्ण के जन्म को जन्माष्टमी के रूप में मनाते है....।

- ब्र.कु. गंगाधर

आजकल तो `नेताओं' तथा `महात्माओं' के जन्मदिन मनाने का काफी रिवाज़ है। आये दिन भारत में कभी विवेकानन्द जयन्ती, कभी महावीर जयन्ती, कभी गांधी जयन्ती, कभी तिलक जयन्ती, कभी राष्ट्रपति जी का जन्मदिन और कभी नेताजी सुभाषचन्द्र बोस का जन्म दिन मनाया जाता है। इन व्यक्तियों और जयन्तियों पर आप विचार करेंगे तो देखेंगे कि इनमें से कई व्यक्ति तो केवल राजनीति ही के क्षेत्र में प्रतिभाशाली माने गये हैं और अन्य कई केवल धार्मिक क्षेत्र में। दोनों क्षेत्रों में समान रूप से किसी का प्रभुत्व रहा हो, ऐसा शायद कोई भी व्यक्ति नहीं मिलेगा। मिल भी जाये तो भी वह पूज्य कोटि का नहीं होगा। परन्तु श्रीकृष्ण, जिनका जन्मदिन भारतवासी हर वर्ष, `श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव' नाम से मनाते हैं, के जीवन में आपको यह विलक्षणता स्पष्ट रूप से मिलेगी। श्रीकृष्ण निर्विवाद रूप से एक अत्यन्त आध्यात्मिक व्यक्तित्व थे और उन्हें राजनीतिक पदवी, प्रशासनिक कुशलता भी खूब प्राप्त थी। अतः श्रीकृष्ण अपने चित्रों तथा मंदिरों में सदैव प्रभामण्डल (प्रकाश के ताज) से सुशोभित तथा रत्न-जड़ित स्वर्णमुकुट से भी सुसज्जित दिखाई देते हैं। इसलिए मालूम रहे कि श्रीकृष्ण जन्माष्टमी का उत्सव हमें धार्मिक और राजनैतिक दोनों सत्ताओं की पराकाष्ठा को प्राप्त श्रीकृष्ण देवता की याद दिलाता है।

श्रीकृष्ण जन्म ही से महान् थे

इस प्रसंग से ध्यान देने के योग्य एक बात यह भी है कि दूसरे जो प्रसिद्ध व्यक्ति हुए हैं कि जिनके जन्म-दिन एक सार्वजनिक उत्सव बन गये हैं, वे कोई जन्म ही से पूज्य या महान् नहीं थे। उदाहरण के तौर पर विवेकानन्द सन्यास के बाद ही महान् माने गये। महात्मा गाँधी प्रौढ़ अवस्था में ही एक राजनीतिक नेता अथवा एक सन्त के रूप में प्रसिद्ध हुए। यही बात तुलसी, कबीर, दयानन्द, वर्द्धमान महावीर आदि-आदि के बारे में भी कही जा सकती है। परन्तु श्रीकृष्ण की यह विशेषता है कि उनके जन्म के समय भी उनकी माता को विष्णु चतुर्भुज का साक्षात्कार हुआ और वे जन्म ही से पूज्य पदवी को प्राप्त थे। आप उनके किशोरावस्था के चित्रों में भी उन्हें दोनों ताजों से सुशोभित देखते होंगे। उनकी बाल्यावस्था के जो चित्र मिलते हैं, उनमें भी वे मोर पंख, मणिजड़ित आभूषण तथा प्रभामण्डल से युक्त देखे जाते हैं। आज भी जन्माष्टमी के दिन भारत की माताएं पालने या पंगूरे में श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की मूर्ति या किसी चेतन प्रतिनिधि रूप में बालक को लिटाकर उसे बहुत भावना से झुलाती हैं। आज भी श्रीकृष्ण की बाल्यावस्था की झांकियाँ लोग बहुत चाव और सम्मान की दृष्टि से देखते हैं। आप कल्पना करें कि ऐसे महान विश्वनायक यदि पुनः इस धरा पर आ जायें तो फिर से यहीं पर स्वर्ग होगा और सुख, शांति की बांसुरी बजेगी। महान दिव्य पुरुष का आगमन बहुत जल्द ही होगा...। भारत में साफ, शुद्ध व दिव्यता से आलोकित छटा बिखरेगी। वो समय अब दूर नहीं जब हम सब श्रीकृष्ण के साथ जीवन में रास लीला करेंगे।

जिस बच्चे को अभिमान नहीं है वही उपराम है

दादी जानकी, मुख्य प्रशासिका

शिवबाबा ने अपना काम करने के लिए ब्रह्मा बाबा से देह सहित देह के सब सम्बन्ध, सब बातें फिनिश कराके अपना बना लिया। शिवबाबा ने सेकेण्ड में ब्रह्माबाबा में प्रवेश किया, उसी घड़ी बाबा की दृष्टि बदल गयी। लाइट लाइट दिखाई पड़ी, माइट मिली। आज दिन तक अव्यक्त हो करके भी यही काम कर रहा है। शिवबाबा तो जन्म-मरण में आता ही नहीं है, पर ब्रह्मा बाबा ने साकार शरीर में होते अव्यक्त स्थिति ऐसी बनाई जो वह अव्यक्त स्थिति अभी भी काम कर रही है। यह जानने, मानने, अनुभव करने से हमारी ऐसी स्थिति अव्यक्त बन सकती है। ज़रा भी अभिमान तो छोड़ो, देहभान भी नहीं, जैसे ब्रह्मा बाबा को देह के भान से भी न्यारा देखा। परमात्मा ने अभी जो संस्कार बनाये हैं उसमें द्वापर के बाद भी अभिमान नहीं आया होगा। चेक करो, सभी ऐसा फॉलो फादर का फायदा उठा रहे हैं? सी फादर, फॉलो फादर।

बाबा जो सुबह को मुरली चलायेगा, सारे दिन में कोई शब्द गहराई में ले जाते तो वो अनुभव भूलता नहीं है क्योंकि शिवबाबा सर्व आत्माओं का पिता है, उसने नई दुनिया स्थापन करने के लिए ब्रह्मा बाबा का रथ ले लिया। रथ कहता है यह मेरा नहीं है उसका है, पर पुरुषार्थ में ब्रह्मा बाबा ऐसा ज़रा भी व्यक्त भाव नहीं, आवाज़ से परे। तो अभी समय अनुसार बाप समान पुरुषार्थ करना चाहिए, यह अंतिम घड़ियाँ हैं। ज्ञान में किसी को कितना, किसी को कितना समय हुआ है, पर पुरुषार्थ में, बाबा की दृष्टि में कितने साल के हो गये हो? ज्ञान दिल से सुनाना, ऐसे नहीं सिर्फ लेक्चर करना है, दिल से सुनाने की जो अंदर से भावना है, बाबा ने जो सुनाया है वही सुनाना है।

सारी दुनिया में, सारे कल्प में ऐसा सेवा का स्थान कोई भी नहीं है, जो सेवा बढ़े, भाग्य बनावें। तो भाग्य बनाने में तीन बातें हैं। पहले अंदर से त्याग हो, त्याग के लिए वैराग्य चाहिए। वैराग्य भी शमशानी नहीं, कोई ऐसी बात आयी तो वैराग्य आया फिर कहाँ रग चली गयी, फिर वो त्याग नहीं कर सकता है। त्याग वृत्ति से त्याग फिर कारोबार में है, लौकिक या ईश्वरीय परिवार में है, फिर अनासक्त वृत्ति है। जिसको बाबा कहते गृहस्थ में रहते हुए ट्रस्टी है। कोई भी चीज़ को अपनी नहीं समझता है। शुरु में सेवायें जिस तरीके से हुई हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से सेवा करने वाले यहां रहने वालों से भी ज़्यादा भाग्यवान हैं। समर्पण माना क्या? पढ़ाई में रेग्युलर, धारणा में नम्बरवन। कोई भी बात को मेरा नहीं समझे। बाबा देखता है बच्चे को अभिमान नहीं है, उपराम है। जैसे सारे विश्व की सेवा में शिवबाबा ने ब्रह्मा बाबा को साथी बनाया। जब तक विनाश होगा तब तक दोनों (साकार निराकार) मिल करके, अव्यक्त हो करके सेवा कर रहे हैं। त्याग वृत्ति और अनासक्त वृत्ति से जो सेवा हुई उसके लिए मान मिला, उसमें भी वृत्ति न जाये क्योंकि बाबा ने कराया है। कभी यह चिंतन नहीं कि मैंने किया या मुझे करना है। फ्री हैं। ऐसी स्थिति बनाने से पहले हम बाबा पर बलिहार हुए, अभी बाबा हमारे ऊपर बलिहार हुआ।

अभी भगवान का इतना प्यार देखा है और सबको करता है, कोई नहीं कहेगा मेरे को बाबा प्यार नहीं करता। बाबा तो करता है लेकिन वो नहीं लेता तो बाबा क्या करे? बाबा प्यार दे रहा है, वो फिर थका हुआ है, मूँझा हुआ है, घबराया हुआ है, थोड़ा सा निराश हो जाता है तो बाबा क्या करे? तो बाबा का दोष नहीं है, कितना बाबा को याद करते हैं, लेकिन नहीं याद आता है तो मैं क्या करूँ? कोई और बातें याद करेंगे तो बाबा कैसे याद आयेगा? बाबा अनकंडीशनल लव देता है परन्तु होशियार बहुत है, कंडीशन बहुत डालता है। ज़रा भी बुद्धि में हेराफेरी हुई तो बाबा के साथ का अनुभव नहीं हो

खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है

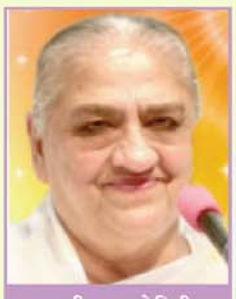

दादी हृदयमोहिनी
अति.मुख्य प्रशासिका

बाबा ने हमें बहुत ही सुंदर ज्ञान दिया है, लेकिन ज्ञान में कायदे भी हैं। ज्ञान में बोल के ऊपर भी कायदे हैं, भले फ्री हैं हम, ब्राह्मण परिवार है, कोई किसके बन्धन में नहीं है, परन्तु मर्यादायें तो हैं ना। जनरल बाबा ने मर्यादायें बता दी हैं, पर्सनल छोड़ो लेकिन जनरल जो बाबा बताते हैं, हमारे लिट्रेचर में भी छपता है, ऑफिशियल वह तो हमारे में होने ही चाहिए ना! चलो, सब चल रहे हैं, हम भी चल रहे हैं, ठीक है। ऐसी कोई न कोई बात उल्टी बुद्धि में आ जायेगी ना तो फिर उल्टा चलेगा। लेकिन जो ज्ञानी तू आत्मा है वो हमेशा सोचता है कर्म करने के पहले, जो कर्म मैं कर रहा हूँ किस लक्ष्य से? पहले लक्ष्य भी मेरा राँग है जैसेकि नाम चाहिए, या काम थोड़ा हो तो महिमा हो, लक्ष्य ही राँग है, तो उसमें काम भी ऐसा ही होता है। खुद अपने से भी अंदर संतुष्ट नहीं होगा, क्योंकि यह जो मैंने किया है वो ठीक नहीं है। कोई भी बात हो क्योंकि जेनरल में लेन-देन वगैरा चीज़ें देना लेना, यह सब होगा और होता ही है। लेकिन मेरी अवस्था उस हलचल में हिले नहीं, मैं अपने मौज को छोडूँ नहीं। मौज में रह करके कमल पुष्प समान रह सकते हैं। अगर बुद्धि में लक्ष्य है, मुझे ऐसा चलना है जैसे शुरु-शुरु में हम आये तो लक्ष्य मिला ना कि कमल पुष्प समान न्यारे और प्यारे रहना है। बाबा की मुरलियों में भी भिन्न-भिन्न युक्तियाँ रहने के लिए मिलती रहती हैं। और संगठन है तो उसमें अटेन्शन तो रखना ही पड़ता है। उसमें चेक करें कि मैं मर्यादापूर्वक हूँ, चलते-चलते सारा समय ठीक रहता हूँ? या कोई न कोई बात बीच में आ जाती है? ठीक चलते चलते भी कभी बीच में आ जाती है, तो उसकी जजमेन्ट के लिए चाहिए सचमुच योगयुक्त आत्मा। बाबा की याद में बैठके बाबा द्वारा ही चेक करायें कि मैं ठीक हूँ या नहीं? और बाबा की टचिंग तो होती है, ऐसे नहीं है मैं चाहूँ बाबा से और बाबा हमको नहीं देवे, हमारी गलती हो सकती है, बाबा की नहीं। भले पहले नहीं पता पड़ता है लेकिन चलते-चलते फिर मन में आ जाता है, सही बात भी आती है, वो कैच करें बस। ऐसे नहीं बात को चला लेवे। कर लेंगे, मेरी बुद्धि में स्पष्टीकरण तो है कि यह करना है लेकिन करने की हिम्मत कम है। जब करना ही है तो करना ही है, फिर उसको हल्का नहीं छोड़ें। किसी की भी मदद चाहिए तो ले सकते हैं। कोइ भाई बहनों से भी राय ले सकते हैं, थोड़ा वेरीफाई कराना चाहिए। जो समझदार हैं, वो तो बातें समझ जाते हैं लेकिन फिर भी वेरीफाई कराना चाहिए।

खुशी कभी नहीं गंवायें, बातें तो आयेंगी। यहाँ इतने जो भी रहते हैं, उनके साथ रहना माना साथ निभाना और भिन्न-भिन्न रहते हैं। फिर भी हम तो आप लोगों को हिम्मतवाला समझते हैं जो आपने फौरन ही जज किया कि क्या करना है, क्या नहीं। कई अभी तक भी जज कर रहे हैं, करना क्या है? फायदा भी नज़र आता है और धोखा भी समझ में आता है। पता अंदर पड़ता है लेकिन नाम के कारण बेफिक्र हो जाते हैं। तो हमें अपने को भी चेक करना है और दूसरे जो साथी रहते हैं उनसे भी चेक कराना है। अगर अंदर सेटीस्फाई हो कि मैं ठीक हूँ, तो कोई बात नहीं। लेकिन अगर चलते-चलते रुक जाते हैं और खुशी कम हो जाती है तो ज़रूर चेक करना चाहिए। खुशी कई बीमारियों को खत्म करती है। खुशी नहीं होगी तो कई बीमारियां आ जाती हैं। फिर यहां संगठन का बंधन भी है। आप चाहो आज यह नहीं करूँ, आपको करना ही पड़ता है। ज़रूर यह बंधन है लेकिन यह बंधन फायदे वाला है। वो तंग होके नहीं करें, पहले बुद्धि को समझायें राईट क्या है?